VETERINARY TODAY INTERNATIONAL
ISSN 2583-8288

पशु प्रसूति के संक्रमण: पहचान, उपचार और रोकथाम

डॉ.प्रत्यांशु श्रीवास्तव[1] , डॉ.अनुराग पटेल[2], डॉ.महिमा पोरवाल[3], डॉ.मीनू तामुत[4]

[1,2,3,4]भाकृअनुप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज़्ज़तनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत, 243122

DOI:10.5281/Vettoday.17237505

परिचय:

प्रसूति पश्चात संक्रमण मादा पशुओं के प्रजनन स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर समस्या है। यह न केवल पशु के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है बल्कि दूध उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता को भी कम कर देता है। इन संक्रमणों के कारण दूध उत्पादन में उल्लेखनीय कमी आती है, दुग्धार्जन अवधि प्रभावित होती है तथा अगले गर्भाधान में कठिनाई होती है। समय पर सही उपचार और प्रबंधन न करने पर यह बांझपन तक का कारण बन सकता है, जिससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

संक्रमण के कारण

प्रसूति के बाद गर्भाशय शिथिल अवस्था में रहता है और गर्भाशय का द्वार कुछ समय तक खुला रहता है। इस समय गर्भाशय की परतें अत्यधिक संवेदनशील होती हैं और रोगजनक सूक्ष्मजीवों के प्रवेश के लिए उपयुक्त वातावरण बनता है।

संक्रमण के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- **अस्वच्छ प्रसव वातावरण:** गंदे बाड़े में प्रसव होने पर मल-मूत्र, कीचड़ व गंदगी से बैक्टीरिया गर्भाशय तक पहुँच जाते हैं।
- **कठिन प्रसव:** लंबे समय तक चले प्रसव में हाथ डालकर या उपकरण का उपयोग करते समय स्वच्छता न रखने पर संक्रमण का खतरा बढ़ता है।
- **जेर रुकना:** गर्भाशय में जेर का लंबे समय तक रहना जीवाणुओं के लिए पोषण माध्यम का कार्य करता है।
- **रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी:** कैल्शियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, विटामिन A, D और E की कमी से संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।
- **प्रसूति के समय अत्यधिक आघात:** बार-बार जोर लगाना या गर्भाशय को चोट पहुँचाना भी संक्रमण का कारण बन सकता है।

संक्रमण के क्लिनिकल लक्षण

- **योनि और गर्भाशय से स्राव:**
  - ❖ योनि से असामान्य स्राव निकलना सबसे प्रमुख लक्षण है।

- स्राव का रंग पीला, भूरे या रक्त मिश्रित हो सकता है।
- स्राव से तीव्र दुर्गंध आती है, जो बैक्टीरियल संक्रमण का संकेत है।
- कभी-कभी मवाद जैसा स्राव निकलता है, विशेषकर मेट्राइटिस और पायोमीट्रा में।

- **तापमान और सामान्य शारीरिक स्थिति:**
  - शरीर का तापमान 102°F से अधिक हो सकता है।
  - पशु सुस्त, कमजोरी महसूस करता है और सामान्य गतिविधियों में कमी आती है।
  - खाने-पीने की इच्छा कम हो जाती है, हरी चारा या चारा ठीक से नहीं खाता।
  - संक्रमण की गंभीर स्थिति में पशु कम चलना-फिरना और लगातार बैठना शुरू कर देता है।
- **दूध उत्पादन में परिवर्तन:**
  - दूध उत्पादन में अचानक और उल्लेखनीय कमी।
  - दूध का द्रव्यमान या गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।
- **प्रजनन व्यवहार में असामान्यता:**
  - पशु बार-बार हीट में नहीं आता।
  - गर्भाधान में असफलता या रिपीट ब्रीडिंग की समस्या।
  - दीर्घकालिक संक्रमण में गर्भाशय की कार्यक्षमता प्रभावित हो जाती है।
- **अन्य संभावित लक्षण:**
  - पसलियों और पेट के नीचे के हिस्से में दर्द या अस्वस्थता।
  - कभी-कभी पेट फूलना
  - पशु असामान्य व्यवहार दिखा सकता है जैसे बार-बार लेटना या उठने-बैठने में कठिनाई।

संक्रमण के प्रकार

1. **जेर का न उतरना:** सामान्यतः प्रसव के 6–12 घंटे के भीतर जेर का बाहर आना अपेक्षित है। यदि 12 घंटे के बाद भी जेर गर्भाशय में लटकी रहे तो चिकित्सकीय हस्तक्षेप आवश्यक है।
2. **एंडोमेट्राइटिस:** गर्भाशय की अंदरूनी परत का हल्का संक्रमण। इसमें बुखार नहीं होता परंतु पतला, सफेद या मटमैला स्राव निकलता है।
3. **मेट्राइटिस:** गर्भाशय की सभी परतों का संक्रमण। इसमें दुर्गंधयुक्त मवाद निकलता है, तेज बुखार आता है और पशु की स्थिति बिगड़ जाती है।
4. **पायोमीट्रा:** दीर्घकालिक रोग जिसमें गर्भाशय का द्वार बंद हो जाता है और गर्भाशय मवाद से भर जाता है। इसमें पशु लंबे समय तक हीट में नहीं आता।

प्रसूति पश्चात संक्रमण का उपचार एवं प्रबंधन

1. सामान्य प्रबंधन

- प्रसव से पहले और बाद में पूर्ण स्वच्छता रखें।
- प्रसव के बाद गर्भाशय की नियमित पशुचिकित्सक से जाँच कराएँ।
- संक्रमित पशु को अलग रखें और स्वच्छ, सूखा वातावरण उपलब्ध कराएँ।
- पौष्टिक आहार, हरा चारा, खनिज मिश्रण और विटामिन सप्लीमेंट दें ताकि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े।

2. औषधीय उपचार

(A) गर्भाशय की सफाई:

- गर्भाशय की धुलाई गर्म सेलाइन या हल्के पोटेशियम परमैंगनेट घोल से की जाती है।
- आवश्यकता पड़ने पर ल्यूगोल्स आयोडीन (0.1–0.2%) जैसे एंटीसेप्टिक घोल का प्रयोग करें।

(B) एंटीबायोटिक थेरेपी:

- गर्भाशय में एंटीबायोटिक टैबलेट/बोलस (जैसे ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन, सेफापिरिन) डालना।
- गंभीर संक्रमण में इंजेक्शन द्वारा सिस्टमेटिक एंटीबायोटिक्स (सेफ्ट्रियाक्सोन, एनरोफ्लॉक्सासिन, जेंटामाइसिन आदि) 3–5 दिन तक प्रयोग करें।

(C) गर्भाशय संकुचन हेतु:

- ऑक्सीटोसिन या प्रोस्टाग्लैंडिन F2α देने से गर्भाशय संकुचित होता है और स्त्राव बाहर निकलता है।

(D) सहायक उपचार:

- एनाल्जेसिक और एंटीपायरेटिक (जैसे मेलॉक्सिकैम, फ्लुनिक्सिन)।
- IV फ्लूड थेरेपी डिहाइड्रेशन व कमजोरी में सहायक होता है ।
- खनिज व विटामिन सप्लीमेंट कैल्शियम, फॉस्फोरस, सेलेनियम, विटामिन A, विटामिन D, – विटामिन E रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है ।

3. रोग-विशेष प्रबंधन

- **जेर का न उतरना:** 12 घंटे से अधिक समय पर चिकित्सक द्वारा जेर निकलवाएँ, गर्भाशय धुलाई, एंटीबायोटिक्स व ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन लगवाएँ।
- **एंडोमेट्राइटिस:** गर्भाशय में एंटीबायोटिक बोलस, गर्भाशय धुलाई, हल्के मामलों में प्रोस्टाग्लैंडिन इंजेक्शन लगवाएँ।
- **मेट्राइटिस:** 5–7 दिन तक सिस्टमेटिक एंटीबायोटिक्स, गर्भाशय धुलाई व एंटीबायोटिक बोलस, ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन लगवाएँ।
- **पायोमीट्रा:** PGF2α (डाइनोप्रोस्ट/क्लोप्रोस्टेनॉल) इंजेक्शन से गर्भाशय संकुचन, लंबे समय तक एंटीबायोटिक्स और गर्भाशय की सफाई कराना चाहिए।

रोकथाम:

प्रसव के समय और बाद में पूर्ण स्वच्छता रखें।

- ❖ कठिन प्रसव की स्थिति में केवल प्रशिक्षित व्यक्ति या पशु चिकित्सक ही हस्तक्षेप करें।
- ❖ गर्भावस्था व प्रसवोत्तर अवधि में नियमित रूप से खनिज मिश्रण व विटामिन सप्लीमेंट दें।
- ❖ प्रसव के बाद 10–15 दिन तक पशु का दैनिक निरीक्षण करें।
- ❖ समय पर उपचार से बांझपन व आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है।

किसानों के लिए संदेश:

प्रसूति पशु के स्वास्थ्य का सही ध्यान रखना आपके लिए आर्थिक और प्रजनन दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। प्रसव के समय और पशवोत्तर अवधि में स्वच्छता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, ताकि संक्रमण से बचा जा सके। संक्रमण न केवल पशु की सेहत पर असर डालता है, बल्कि दूध उत्पादन कम कर सकता है और अगले गर्भाधान में कठिनाई उत्पन्न कर सकता है।

इसलिए निम्न बातों का पालन करना चाहिए:

1. **स्वच्छ वातावरण:** पशु को साफ और सूखे बाड़े में रखें। प्रसव के समय साफ उपकरण और हाथों की स्वच्छता बनाए रखें।
2. **समय पर निरीक्षण:** प्रसव के 10–15 दिन पशु का दैनिक निरीक्षण करें। असामान्य स्त्राव, बुखार या सुस्ती के लक्षण दिखाई दें तो तुरंत पशुचिकित्सक से संपर्क करें।
3. **सही उपचार:** संक्रमण के लक्षण दिखने पर गर्भाशय की सफाई, एंटीबायोटिक थेरेपी और आवश्यक दवाओं का समय पर उपयोग करें।
4. **संतुलित पोषण:** पशु को पौष्टिक आहार, हरा चारा और आवश्यक खनिज व विटामिन सप्लीमेंट दें, ताकि रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत हो।
5. **प्रशिक्षित हस्तक्षेप:** कठिन प्रसव की स्थिति में केवल प्रशिक्षित व्यक्ति या पशु चिकित्सक से संपर्क करें।